स्फटिक श्रीयंत्र

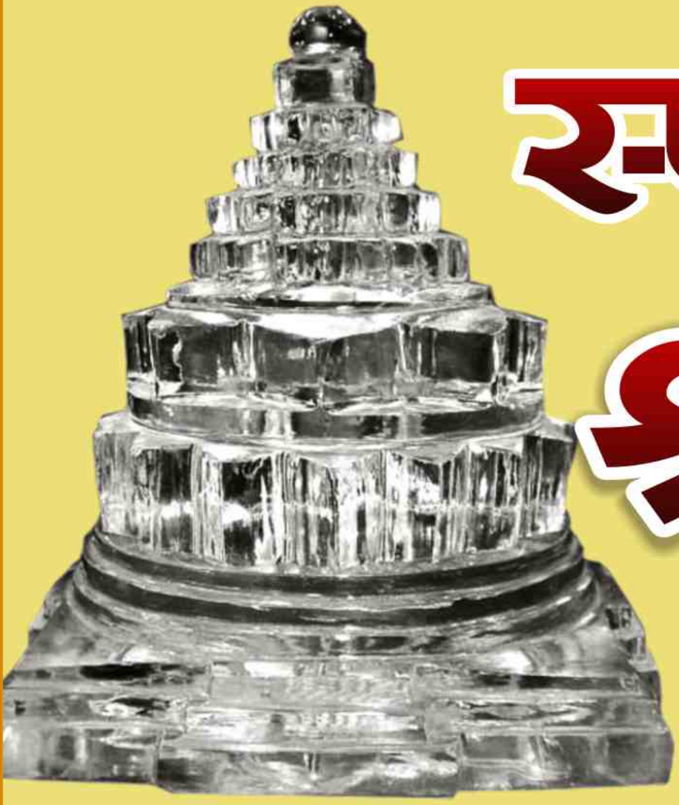

इतना समृद्धिदायक क्यों?

वर्तमान भौतिक युग में धन की महत्ता बहुत अधिक बढ़ गई है। आजकल हर किसी को पग-पग पर धन की आवश्यकता पड़ती है। धन प्राप्ति के लिए प्रत्येक मनुष्य अभिलाषित रहता है तथा इसके लिए प्रयास भी करता है, परंतु लक्ष्मी की कृपा प्रत्येक मनुष्य को प्राप्त नहीं होती।

धार्मिक दृष्टि से लक्ष्मी को समृद्धिदाता माना गया है। लक्ष्मी की उपासना करने से समृद्धि प्राप्त होती है। ज्योतिष की दृष्टि से शुक्र ग्रह बलवान् हो तो समृद्धि प्राप्त होती है। अतः समृद्धि प्राप्त करने के लिए लक्ष्मी और शुक्र ग्रह दोनों की अनुकूलता आवश्यक है। स्फटिक श्रीयंत्र से ये दोनों ही आवश्यकताएँ भली-भाँति परिपूर्ण होती हैं। इसी कारण स्फटिक श्रीयंत्र को समृद्धि देने का चमत्कारिक उपाय माना गया है।

स्फटिक शुक्र का प्रतिनिधि है। शुक्र गृह को बलवान् करने के लिए स्फटिक श्रीयंत्र की साधना करने का विधान है। श्रीयंत्र चूँकि लक्ष्मी का तीव्र प्रभावशाली सिद्धिदायक यंत्र है। अतः स्फटिक श्रीयंत्र की उपासना करने से माता लक्ष्मी की असीम कृपा तो प्राप्त होती ही है, साथ ही समृद्धिदायक शुक्र ग्रह भी बलवान् होता है।

स्फटिक श्रीयंत्र की पूजा प्रतिदिन करने वाले व्यक्तियों को धन-संपदा एवं वैभव की कमी नहीं रहती। जिस घर में अथवा दुकान में या पूजा घर में स्फटिक श्रीयंत्र रखा होता है, वहाँ निवासियों को माता लक्ष्मी की कृपा से सभी प्रकार का धन-वैभव प्राप्त होता है। श्रीयंत्र की उपासना किसी भी शुभ मुहूर्त में प्रारंभ की जा सकती है। आर्थिक कष्टों से जूझ रहा कोई भी मनुष्य जीवन को समृद्ध बनाने के लिए श्रीयंत्र की उपासना करके माता लक्ष्मी की कृपा प्राप्त कर सकता है। जो व्यक्ति भारी व्यावसायिक ऋण के बोझ से दबे हुए हों, जिनका खर्चा अधिक और आमदनी कम हो, जिन व्यक्तियों के व्यवसाय में एकाएक मंदी आ गई हो, जिन व्यक्तियों का धन बाजार में फँस गया हो तथा प्रयत्न करने पर भी नहीं मिल रहा हो, धन लौटाने वाले व्यक्ति झूठे आश्वासन दे रहे हों, जिस व्यक्ति के व्यवसाय में बार-बार धन की हानि हो रही हो, जो व्यक्ति धन के लिए हमेशा चिंतित रहते हों, जिन व्यक्तियों को जिम्मेदारियों के निर्वहन के लिए धन की परम आवश्यकता हो, जो व्यक्ति धन होते हुए भी वैभवहीन जीवन व्यतीत कर रहें हों, उन्हें स्फटिक श्रीयंत्र की पूजा करने से अभीष्ट फलों की सिद्धि अवश्य होती है। श्रीयंत्र की पूजा एवं प्रतिष्ठा के लिए दीपावली का पर्व सर्वश्रेष्ठ अबूझ मुहूर्त होता है। इसके अतिरिक्त नवरात्र आदि अन्य शुभ मुहूर्तों में भी श्रीयंत्र का पूजन किया जा सकता है। जो व्यक्ति प्रतिदिन श्रीयंत्र का पूजन करते हैं, उन्हें भौतिक जगत् का कोई भी ऐश्वर्य दुर्लभ नहीं रहता।

कैसे करें स्फटिक श्रीयंत्र की दैनिक पूजा

जो व्यक्ति पूजा-पाठ के शास्त्रीय नियमों का अधिक ज्ञान नहीं रखते हों, जिन्हें दशोपचार, षोडशोपचार पूजन का ज्ञान और अभ्यास नहीं हो, उनके लिए श्रीयंत्र की पूजा का सबसे सरल और प्रभावी तरीका यह है कि प्राण-प्रतिष्ठित स्फटिक श्रीयंत्र को पूजा घर में चाँदी की प्लेट अथवा लाल वस्त्र पर रखना चाहिए। तत्पश्चात् प्रतिदिन प्रातः काल स्नानादि से निवृत्त और पवित्र होकर श्रीयंत्र के सम्मुख गौघृत का दीपक एवं सुगंधित धूप या अगरबत्ती जलानी चाहिए। तत्पश्चात् स्फटिक माला अथवा कमलगट्टे की माला से निम्नलिखित लक्ष्मी मंत्र का प्रतिदिन एक माला (108 बार) जप करना चाहिए।

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः।

लक्ष्मी मंत्र के जप के उपरान्त निम्नलिखित शुक्र मंत्र की यथाशक्ति उच्चारण आवृत्ति भी करनी चाहिए।

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।

जप पूर्ण होने के पश्चात् माला के सुमेरू को माथे से स्पर्श कराके पूजा घर में ही अथवा किसी अन्य स्वच्छ स्थान पर रख देना चाहिए। इस प्रकार इस स्फटिक प्रयोग को करके भी आप इस दीपावली को लक्ष्मी को अपने घर आने पर विवश कर सकते हैं।

न्यौछावर – 1500/ – से प्रारम्भ

♦♦♦